Monism — एक तत्ववाद अनेकत्ववाद का विरोधी सिद्धांत है। इसके अनुसार मूलतत्व की संख्या अनेक नहीं बल्कि एक है। स्वरूप में वह किसी प्रकार का हो सकता है। जड़ द्रव्य स्वरूप का, चेतनस्वरूप का अथवा दोनों से तटस्थ। एक ही मौलिक तत्व विश्व के अनेकों भौतिक तथा मानसिक पदार्थों के रूप में प्रकट होता है। सारी विविधता या तो उस एक तत्व की ही अभिव्यक्ति है या प्रतीति। इसलिए विविधता के आधार में एक मौलिक एकता है। विविध तत्वों एवं पदार्थों को एक दूसरे से बिल्कुल अलग और स्वतंत्र नहीं माना जा सकता।

समर्थक प्रमाण — अनेकत्ववाद के समर्थन में हमारा साधारण अनुभव भी प्रमाण है। लेकिन साधारण अनुभव सत्य का ज्ञान देने के लिए सदैव एक तर्कसंगत एवं सुरक्षित स्त्रोत नहीं है। इसमें भ्रम भी उत्पन्न होता है। साधारण अनुभव तो हमें अवश्य ही अनेकता और विविधता के अन्दर ही अन्तर्भूत एक एकता दृष्टिगत होती है। विश्व की विविधता में अन्तर्निहित इस

एकता की हम अवहेलना नहीं कर सकते। विश्व की विविधता के अन्दर ही कुछ नियम है सर्वत्र एक सामञ्जस्य और व्यवस्था है। और इसलिए विज्ञान भी इस मान्यता पर काम करता है कि विश्व में अनेकों तत्व होते हुए भी उनके अन्दर एकता विद्यमान है। पाश्चात्य दार्शनिक बर्गसाँ ने अपने सृजनात्मक विकास (Creative evolution) के सिद्धांत में विश्व की विविधता के साथ-साथ उसकी अन्तर्निहित एकता की व्याख्या को भी अपना लक्ष्य बनाया और उसी लक्ष्य से प्रेरित होकर विकास क्रिया के मूल में एक ही सृजनात्मक तत्व जीवन शक्ति को स्वीकार किया।

एकतत्ववाद के पक्ष में एक तर्क सम्बन्धों की आन्तरिकता के आधार पर भी दिया जाता है। हमने देखा है कि तार्किक विश्लेषण करने पर सम्बन्धों की व्याख्या की व्याख्या करें तो अनवस्था दोष (Infinite fallacy) में पड़ जाते हैं।